

Rodhas Mahila College, SASARAM

Study Material : SANSKRIT

B.A. Part-2, Paper-03

By:

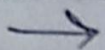
Dr. Savitri Singh,  
Associate Professor,  
Deptt. of Sanskrit,  
R.M.C. SASARAM

Topic: शुकनासोपदेश के आधार पर  
राजाओं की चरित्र वर्णन / विशेषताएँ

राजाओं की विशेषताओं अथवा चरित्र-परिवर्तन की ओर  
संकेत करते हुए महाभारती शुकनास कहते हैं कि:

इत्थम विडम्बनां चानुष्ठीविना जनेन क्रियमाणामभिनदान्ते । मत्सा  
देवताव्यारोपणप्रतारणासम्भूतसंभावनोपहताश्चान्तः प्रविष्ट्यापरभुज-  
द्वयमिवात्मबाहुयुगलं सम्भावयन्ति । त्वगतवितृतीयलोचने स्व-  
ललाटमाशङ्कते ।

राजा लोग अपने अनुष्ठीवियों, अनुचरो इंद्रा  
की जाती हुई गुणरहित नकल को देखकर भी उनका स्वागत  
करते हैं अनजित होते हैं। अपने आप को विष्णु, शिव  
आदि देवता मानने की वचन से उत्पन्न सम्भावनाओं  
द्वारा नष्ट हुई बुद्धि वाले वे (राजा) मनसे अपनी दोनों  
भुजाओं में ही समाई हुई अन्त दोनों भुजाओं की अर्थात्  
अपने को बहुभुजी विष्णु की कल्पना करते लगते हैं तथा  
अपने ललाट में खाल के अर्क छिपे तृतीय नेत्र वाला  
(शिव) मानने लगते हैं।



दर्शनपदानमपि अनुग्रहं गणयन्ति । दृष्टिपत्रमपि उपकारपक्षे  
स्थापयन्ति । सम्भाषणमपि संविभागमध्ये कुर्वन्ति । आक्षामपि  
वस्त्रदानं मन्यते । स्पर्शमपि पावनभाकलयन्ति ।

राजा लोग दर्शन देना भी अनुग्रह मानते हैं,  
लोगों की झोर देख लेना भी उपकार समझते हैं, उनके  
साथ वार्तालाप करना भी पुरस्कार देना समझते हैं।  
आशा देना भी वरदान देना मानते हैं, उनके स्पर्श  
करना भी पवित्र करना समझते हैं।

मिथ्यामाहात्म्यगर्वनिर्मरशश्च न प्रणमन्ति देवताभ्यः,  
न पूजयन्ति दिवजातीन्, न मानयन्ति मान्यान्, नान्यथान्य-  
न्यनीयान् नाभिवाद्यन्यभिवाद्यनाहीन् नाभ्युत्तिष्ठन्ति शुभान्।

मूठे महत्व के अभिमान से युक्त  
राजा लोग देवताओं को प्रणाम नहीं करते हैं, ब्राह्मणों  
की वल्ज पात्रादि देकर पूजा नहीं करते हैं, माननीय लोगों  
का मान नहीं करते, पूजनीय लोगों की पूजा नहीं करते,  
प्रणाम करने योग्य लोगों को प्रणाम नहीं करते तथा  
शुभजनों का उठकर सत्कार नहीं करते हैं।

व्यर्थ प्रयास से दबाये हुए विषयभोग  
को सुख मान कर विद्वान् का (राजा लोग) उपहास करते  
हैं, वृद्ध लोगों के द्वारा दिये गये उपदेश को बुढ़ापे के  
कारण कक्वाद मानकर उनको हीन दृष्टि से देखते हैं।  
मन्त्रियों की सलाह को अपनी बुद्धि की पराजय मानकर  
निन्दा करते हैं तथा हित की बात कहने वाले के प्रति  
वे क्रोध करते हैं।

अनर्पकायासान्वरितविषयोपभोगसुखमित्युपहसन्ति  
विद्ववण्जनम् अरावैक्लव्यप्रकपितमिति पश्यन्ति वृद्धजनोपदेश,

आत्मपक्षापरिवर्तये श्यसूयानि सन्निवोपदेशाय, कुश्यानि हितवादिने ।  
स्वीया तमभिनन्दानि, तमालपानि तं पार्श्वे  
कुर्वान्ति, तं संवर्द्धयान्ति, तेन सह सुखमवतिष्ठन्ते, तस्मै  
ददाति, तं मित्रतामुपनयान्ति, तस्मै वचनं शृण्वन्ति तत्र वर्षान्ति,  
तं बहु मन्यन्ते, तमाप्ततामापादयान्ति, योऽहर्निर्भामनवशतमुपर-  
न्वितान्जालिर्द्विदैवतमिव विगतान्धवर्जितः स्तौति, यो वा  
माहात्म्यमुद्भावयति ।

कमला!